षष्ठः पाठः

सुभाषितानि

1. परोपकाराय सतां विभूतयः ।
2. उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम् ।
3. सुखार्थिनः कुतो विद्या विद्यार्थिनः कुतः सुखम् ।
4. सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात् न ब्रूयात् सत्यमप्रियम् ।
5. सम्पत्तौ च विपत्तौ च महतामेकरूपता ।
6. स्वदेशे पूज्यते राजा विद्वान् सर्वत्र पूज्यते ।
7. सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः ।
8. न लोभेन समं दुःखं न सन्तोषात् परं सुखम् ।
9. आत्मनः प्रतिकूलानि न परेषां समाचरेत् ।
10. बुभुक्षितः किं न करोति पापम् ।
11. विद्या ददाति विनयम् ।
12. ज्ञानं भारः क्रियां विना ।

शब्दार्थः

सुभाषितानि	=	सुन्दर कथन
परोपकाराय	=	दूसरों के उपकार के लिए
सताम्	=	सज्जनों का/की/के
विभूतयः	=	धन-सम्पत्तियाँ
उदारचरितानाम्	=	ऊँचे विचार वालों का
वसुधैव	=	(वसुधा+एव) संसार ही
सुखार्थिनः	=	सुख चाहने वाले को
कुतो (कुतः)	=	कहाँ से/कैसे
ब्रूयात्	=	बोलें/बोलना चाहिए
महताम्	=	बड़े लोगों का
स्वदेशे	=	अपने देश में
पूज्यते	=	पूजा जाता है/ आदर पाता है
सर्वत्र	=	सभी जगह
आत्मनः	=	अपने से
प्रतिकूलानि	=	भिन्न/विपरीत/अप्रिय
परेषाम्	=	दूसरों का/के लिए
समाचरेत्	=	(सम्+आचरेत्) आचरण करें
बुभुक्षितः	=	भूखा
ददाति	=	देता है/देती है
निरामयाः (निर्+आमयाः)	=	नीरोग
सर्वे	=	सभी

व्याकरणम्

पर + उपकाराय = परोपकाराय । वसुधा + एव = वसुधैव ।

सुख + अर्थिनः = सुखार्थिनः । विद्या + अर्थिनः = विद्यार्थिनः ।

सत्यम् + अप्रियम् = सत्यमप्रियम् ।

पूज्यते – √पूज् + यक् + लट्लकार

समाचरेत् = सम् + आ + √चर् + विधिलिङ् ।

करोति = √कृ + लट्लकार ।

ददाति = √दा + लट्लकार

अभ्यासः

मौखिकः

1. नीचे लिखे गए भावार्थ को बताने वाले सुभाषित बोलें –

(क) भूखा व्यक्ति क्या नहीं कर सकता ?

(ख) राजा को अपने देश में सम्मान मिलता है, जबकि विद्वान् सभी जगह पूजे जाते हैं।

(ग) उदार विचार वालों के लिए संसार ही कुटुम्ब है ।

(घ) अपने से विपरीत आचरण दूसरों के लिए न करें ।

(ङ.) आचरण के बिना ज्ञान व्यर्थ है ।

(च) महान् व्यक्ति सदा एक-सा रहता है ।

(छ) सज्जनों की सम्पत्ति दूसरों के उपकार के लिए होती है ।

2. निम्नलिखित शब्दों का अर्थ बताएँ–

परोपकाराय, कुटुम्बकम्, सुखार्थिनः, निरामयाः, स्वदेशे

3. लिखे गए सुभाषितों का पाठ करें ।

लिखितः

4. दिए गए प्रश्नों का उत्तर लिखें –

(क) किसके लिए सम्पूर्ण पृथ्वी परिवार के समान है ?

(ख) विद्या किसे प्राप्त नहीं होती ?

(ग) किस प्रकार की वाणी बोलनी चाहिए ?

(घ) कौन सभी जगह पूजा जाता है ?

(ङ) विद्या से क्या प्राप्त होती है ?

5. विलोम (विपरीतार्थक) शब्द लिखें –

(i)	सत्यम्	(v)	ज्ञानम्
(ii)	प्रियम्	(vi)	पापम्
(iii)	सुखम्	(vii)	आत्मनः
(iv)	विद्वान्		

6. रिक्त स्थानों को भरें –

(क) ..... सतां विभूतयः ।

(ख) विद्वान् ..... पूज्यते ।

(ग) सर्वे सन्तु ..... ।

(घ) ..... परं सुखम् ।

(ङ) विद्या ..... विनयम् ।

7. निम्नलिखित शब्दों को सुमेलित करें –

(i)	ज्ञानं भारः	(क)	वसुधैव कुटुम्बकम्
(ii)	उदारचरितानां तु	(ख)	क्रियां विना
(iii)	स्वदेशे पूज्यते	(ग)	कुतो विद्या
(iv)	बुभुक्षितः किं न	(घ)	राजा
(v)	सुखार्थिनः	(ङ)	करोति पापम्

8. निम्नांकित शब्दों से वाक्य बनावएँ –

राजा, विद्वान्, स्वदेशे, सुखिनः, विद्या ।

ज्ञानविस्तारः

संस्कृत भाषा में अत्यन्त उपयोगी वाक्यों की अधिकता है । ये जीवन में पालन करने योग्य तो हैं ही इनका प्रयोग किसी भी भाषण, बातचीत या लेख को सुन्दर बना देता है । इन्हें सुभाषित कहते हैं । सुभाषित का अर्थ है- सुन्दर कथन, अच्छी बातें । कहीं कहीं सुभाषित पूरे श्लोक के रूप में हैं और कहीं श्लोक के खण्ड के रूप में हैं । प्रस्तुत पाठ में श्लोकांश के रूप में सुभाषित हैं । इनका भावार्थ इस प्रकार है–

1. सज्जन परोपकार को अपना धर्म समझते हैं । अपनी सारी सम्पत्ति तथा समय को वे परोपकार में लगा देते हैं । विपत्ति में पड़े हुए व्यक्ति की सहायता करना ही परोपकार है ।
2. जो व्यक्ति हृदय से उदार अर्थात् सबको अपना समझने वाले हैं, उन्हें सर्वत्र अपना परिवार ही दिखाई पड़ता है । सारी पृथ्वी उन्हें बन्धु-बान्धव जैसी लगती है । ऐसा सबको होना चाहिए । किसी से वैर-भाव नहीं रखना चाहिए ।
3. विद्या अर्जन करने में सुख-दुःख का विचार नहीं करना चाहिए । विद्यार्थी का जीवन एक तपस्या है । केवल सुख की खोज करने वाला विद्यार्थी नहीं हो सकता ।
4. सत्य को प्रिय वाणी से जोड़ना चाहिये । ऐसा सत्य न बोलें कि किसी को अप्रिय लगे । इसलिए सत्य तथा प्रिय दोनों में समझौता होना चाहिए ।
5. बड़े होने का लक्षण है कि सुख-दुःख में एक समान रहें । सुख के समय अहंकार से भर जायें और विपत्ति के समय कायर या दीन-हीन हो जायें, यह बड़े होने की पहचान नहीं है ।
6. राजा और विद्वान् में अन्तर है । राजा वहीं सम्मानित होता है जहाँ उसका राज्य है । किन्तु विद्वान को उन सभी स्थानों में सम्मान मिलता है जहाँ ज्ञान को आदर दिया जाता है ।
7. भारत के सन्तों की यह मुख्य कामना रहती है कि सभी लोग सुखी और नीरोग रहें । एक-एक व्यक्ति यही चाहता है ।
8. लोभ दुःख का कारण है और सन्तोष सुख देता है ।
9. जो बात हमें प्रतिकूल (कष्टकारक) लगती है वह दूसरों को भी वैसी ही लगती है । इसलिए हम ऐसी बात किसी के प्रति न करें जो उसे कष्ट दे ।
10. भूखा व्यक्ति विवश होता है । वह नियम-विरुद्ध कार्य भी कभी-कभी करने लगता है । इसमें उसकी परिस्थिति का दोष है, अपना नहीं ।
11. विद्या का फल है विनम्रता । सच्चा विद्वान् वही है जो विनम्र हो । उद्दण्डता विद्वान् का लक्षण नहीं है । विद्या में कहीं कमी होने से ही कोई उग्र होता है ।
12. ज्ञान की सार्थकता तभी है जब इसके अनुकूल आचरण किया जाये । आचरण के बिना कोरा ज्ञान व्यर्थ है ।